व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 21 अंक : 86

जनवरी-मार्च-2026

मूल्य ₹ 20

रवींद्रनाथ त्यागी स्मृति, धर्मवीर भारती स्मृति, शारदा त्यागी स्मृति, व्यंग्य चिंतक एवं शब्दान्वेषी कला भूषण सम्मान घोषित

विष्णु नागर को शीर्ष सम्मान, विनोद कुमार विक्की को सोपान सम्मान, स्नेहलता पाठक को 'शारदा त्यागी स्मृति सम्मान'। हरीश पाठक को 'धर्मवीर भारती स्मृति व्यंग्य यात्रा सम्मान', बी.एल. आच्छा तथा संजीव कुमार को 'व्यंग्य यात्रा व्यंग्य चिंतक सम्मान'। संदीप राशिनकर को 'शब्दान्वेषी कला भूषण व्यंग्य यात्रा सम्मान'।

ममता कलिया को 'आकाशदीप पुरस्कार' एवं 'प्रेमचंद कथा सम्मान'। प्रेम जनमेजय एवं सुदर्शना द्विवेदी को 'आशीर्वाद रत्न सम्मान'।

शिवना साहित्य समागम एवं सम्मान समारोह की कुछ छवियां

स्पंदन समारोह की कुछ छवियां

विद्यासागर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. संजय जायसवाल के नेतत्व में 'व्यंग्य यात्रा' लोकार्पित। धीरेंद्र अस्थाना पर केंद्रित 'एक कथा उत्सव', 'रामदरश मिश्र की व्यंग्य चेतना' लोकार्पित। विश्व मैत्री मंच का आयोजन।

जमशेदपुर लिटरेचर फेस्टिवल की कुछ छवियां

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

जनवरी–मार्च 2026

वर्ष–21 अंक–86

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए–3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली–110063

मोबाइल : +91-9811154440

ई–मेल–
premjanmejai@gmail.com
yatravyangya2004@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित।

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री

मोबाइल : + 91-9911077754
+ 91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन धिरौं 4-8

अरविंद तिवारी, मुकेश असीमित, मनोरमा इयर बुक, स्वाति चौधरी, हरिमोहन शर्मा, गिरीश पंकज, अजय अनुरागी, रामकिशोर उपाध्याय, एस.पी.सिंह, राजेश ओझा, विनोद कुमार विक्की, समीक्षा तैलंग

पाथेय 9–12

रवींद्रनाथ त्यागी– मूँछों को लेकर 9
विभूति नारायण राव– एक छात्र नेता का रोजनामचा 10
वनमाली– खरबूजे 11

चिंतन 13- 30

सेवाराम त्रिपाठी–
व्यंग्य की उज्जवलता पर संक्रमण की काली छायाएँ 13
कैलाश मंडलेकर– हिन्दी व्यंग्य का संक्रमण काल और व्यंग्यकारिता का यह दौर 17
अजय अनुरागी– व्यंग्य का चिंता काल 19
समीक्षा तैलंग– संक्रमण काल का उत्तरायण 21
आचार्य राजेश कुमार– हिन्दी व्यंग्य-संक्रमण और आगे 22
अश्वनी कुमार दुबे– हिन्दी व्यंग्य का संक्रमण काल 26
अरुण अर्णव खरे– फैंटेसी-विसंगतियों को अदृश्य... 27

व्यंग्य रचनाएं 31 -74

अरुणेन्द्र नाथ वर्मा– कॉर्पोरेट कबीरदास... 31
कुंदन सिंह परिहार– होनी को टालने के टोटके 33
हरेन्द्र प्रताप– हैलो मिस्टर भ्रष्टाचार! 33
शामलाल मेहता– स्वागत है, झपटमार बंधु 34
अदिति सिंह भदौरिया– सलाह विशेषज्ञों का स्वर्णिम युग 36
श्याम सखा श्याम– सुबह का भूला बनाम घर वापसी 37
मुकेश नेमा– स्वादिष्ट नौकरी से त्याग पत्र 39
तेजेन्द्र शर्मा– पुस्तक मेले में होलसेल लोकार्पण... 40
रूपलाल बेदिया– और तालियाँ बज उठीं 41
राजशेखर चौबे– साइबर क्राइम नहीं साहित्यिक क्राइम 42
संदीप तोमर– मलाईलाल की महागाथा 43
के.पी. सक्सेना 'दूसरे'– मुद्दआ-ए-बहस 44
रामकिशोर उपाध्याय– वो 'हैं' या 'नहीं' 45
राजेश श्रीवास्तव– अथ कागदेव कथा 46
अन्नदा पाटनी– कटोरे की महिमा 47
प्रियंका सैनी– फाइलों का स्वर्ग और सच का नर्क 48
सोमदत्त शर्मा– आवाज की कीमत और... 49
शिशिर सिंह– कोहनियाँ 50
राम कुमार जोशी– कागजों में मरण 51
अखिलेश श्रीवास्तव चमन– विश्वास और अविश्वास 53
नरेश जैन– निंदक नियरे राखिए... 55
गिरीश पंकज– पेड़ पर कविता 56
ऋषभ जैन– शास्त्रीय प्रेमपत्र का जेनजी अनुप्रयोग 57
कल्पना मनोरमा– सफल हुए तो क्या हुए 58
अर्जुन चव्हाण– बड़ों का आशीर्वाद 59
वसंत जमशेदपुरी– बिकाऊ है, खरीदार चाहिए 59
सूर्यकांत द्विवेदी– अखाड़े में कविसम्मेलन 60
सुधा कुमारी– सभ्य लोग 61
अर्जुन चव्हाण– सबसे बुरी बात का बयान 61
भूपेन्द्र भारतीय– लचकलाल के चिंतन आयाम... 62
प्रदीप मिश्रा– दुर्भाग्य, मैं बीमार नहीं हूँ! 63
गुलबीर सिंह भाटिया– सूखा कचरा, गीला कचरा 64
शर्मिला चौहान– रंग ले चुनरिया 65
परवेश जैन– लीपा-पोती 67
महेश कुमार साहू– शेर ने खाई घास 68
संदीप भटनागर– गधे और गुलाबजामुन 69
दयाराम वर्मा– चारों धाम-सेवा तीर्थ 70
सुभाष काबरा– सखि, वो मुझसे कह कर जाते! 71
प्रेम विज– आसमान से गिरा खजूर में... 72
सदाशिव कौतुक– लघु व्यंग्य 73
दिनेश गंगराड़े– यार, पानी ने ही मार डाला, बाप रे... 74

पद्य व्यंग्य 75-82

सुभाष राय– मॉल से लौटकर 75
रामशरण जोशी– हम नक्टे,...असत्येश्वर की जय हो! 76
रमेश मेंदीरत्ता– संगीत का अपराध, नारे बनाम संगीत 77
विनय विश्वास– कविता क्या है, कोरी किताबें... 78
ओम निश्चल– गजल 79
मंजुल भारद्वाज– एक झंडा बेचता है... 80
गुलशन मदान– गजल 80
सुनील 'सावन'– कांकर पाथर जोरि के 80
देवमणि पांडेय की व्यंग्य गजलें 81
विप्रम– खुदा हुआ वो! 81
राज मण्डोरा– सरकारी कर्मचारी की गृहस्वामिनी 82
अशोक बत्रा– मैं प्रत्यय हूँ 82
एस पी सिंह, घनश्याम अवस्थी की गजलें 82

त्रिकोणीय 83

संतोष खरे पर त्रिकोणीय 83-102
परिचय– 83
प्रेम जनमेजय– अनेक विरोध झेलने के बावजूद 84
संतोष खरे– मैं, मेरा समय और मेरी रचनाधर्मिता 85
संतोष खरे की व्यंग्य रचनाएं–
एक मतदाता की पत्रकार वार्ता 88
विश्वगुरू का लोकतंत्र 90
मुख्य अतिथि, साहित्यकार और कलेक्टर 91
संतोष खरे से महावीर अग्रवाल की बातचीत 93
प्रहलाद अग्रवाल– हुए हम दोस्त जिसके... 96
विजयशंकर चतुर्वेदी– सत्ता-संरचना के ढोल... 100
चिन्तामणि मित्र– संतोष खरे और उनका रचना संसार 101
पिलकेंद्र अरोरा पर त्रिकोणीय 103
परिचय– 103
प्रेम जनमेजय– पक्ष-विपक्ष पर चर्चा आवश्यक है 104
पिलकेन्द्र अरोरा एक आत्म-अंकेक्षण रिपोर्ट 105
पिलकेन्द्र अरोरा की व्यंग्य रचनाएं–
काफी हाउस में एक शिखर वार्ता 107
ये रचना अगर छप भी जाए तो क्या है...! 108
स्टेट ड्राईव 109
वरिष्ठ कनिष्ठ का गरिष्ठ संवाद 110
पिलकेन्द्र अरोरा से शोभा जैन की वार्ता 111
पिलकेन्द्र अरोरा– मेरे मन की बात 113
हरीश नवल– जितना मैंने पिलकेन्द्र को जाना 114
ज्ञान चतुर्वेदी– व्यंग्य के सौंदर्यशास्त्र की समझ और प्रयोग 115
सुभाष चन्दर– ...व्यंग्य लेखन पर कुछ नोट्स 116
सूर्यकांत नागर– सात्विक और ईमानदार आक्रोश 118
बी.एल. आच्छा– एक स्टेट फॉरवर्ड व्यंग्य-पंचायत 119
मुकेश जोशी– दुनियाभर में एक अकेले 120

इधर जो मैंने पढ़ा है– 121-135

सुभाष राय, जयंती रंगराजन, आकाश माथुर, ममता सिंह, सूरज प्रकाश, आस्था नवल, अलंकार रस्तोगी, लालित्य ललित, प्रेम जनमेजय, सुदर्शन सोनी, पवन कुमार, परवेश जैन, प्रताप सहगल ,संजीव कुमार, सुरेश अवस्थी की कृतियां।

समाचार 136-144

आरंभ

गुरुग्राम स्थित मेरे आवास में, 10 मार्च 2026 की सुबह, विश्व युद्ध के वतरे के बावजूद, अंगड़ाई ले चुकी थी। इस अंक के संपादकीय को पूर्ण करने की प्राथमिकता चुनौती बन खड़ी थी। आज के दिन को मैंने अंक का संपादकीय पूर्ण करने के लिए तय कर लिया था। अंदर विचारों का आवागमन चल रहा था। बाहर दफ्तर जाने की जल्दी में वाहनों का आवागमन चल रहा था। बैटरी तक से चलने वाले वाहन पिं-पौं करते हुए ध्वनि प्रदूषण फैलाने का धर्म निभाते अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। जात-पात को न मानने वाली किसी भी जाति की चिड़िया के चहचहाहट का स्वर नहीं आ रहा था। बॉलकनी में कौवा बोला- कांव कांव। सुबह की प्यारी नींद में अलसाए कुछ रतजगियों को कौवे की कांव-कांव ध्वनि प्रदूषण लगती है। लालटेन युग होता तो कौवे की कांव-कांव सुनकर मां अपने बेटे से कहती, 'लगता है आज कोई चिठ्ठी या कोई मेहमान आएगा।' आजकल व्हाट्सएप या ईमेल डाकिया भी नोटिफिकेशन के लिए, आपकी मनचाही कांव-कांव का प्रयोग करता है। फर्क इतना है कि इसकी कांव-कांव का गला घोंटने का विकल्प आपके पास रहता है। यह डाकिया आपकी अखंड सेवा में रहता है।

सुबह का समय मेरे अपने दैनिक स्वच्छता अभियान का होता है। उस दिन भी मैं अपने दैनिक स्वच्छता अभियान में व्यस्त था। जब मैं अपने स्वच्छता अभियान में व्यस्त रहता हूँ तो केवल अपने शरीर की सुनता हूँ। सुनना पड़ता है। यदि शरीर की न सुनूँ और मोबाइल की सुनूँ तो स्वच्छता अभियान के दबाव झेलने पड़ते हैं। लगभग प्रतिदिन ऐसे कथावाचकों के फोन आ जाते हैं जो एक ही सांस में, कम से कम पंद्रह मिनट तक, अपनी तथा औरों की रोचक कथाएँ नॉन-स्टॉप सुनाते जाते हैं। कुछ संपादक को सूचनार्थ फोन करते हैं कि उन्होंने कल रात लिखी ताजा रचना अभी-अभी व्हाट्सएप कर दी है। इससे पहले संपादक कुछ कहे, वे अपनी धांसू रचना के धांसू तत्वों का निर्बाध गति से वर्णन करने लगते हैं। संपादक का बेचारा दिमाग शरीर के प्राकृतिक दबाव झेलने को विवश होता है। जो अपने दैनिक स्वच्छता अभियान में व्यस्त नहीं होते, वे मॉर्निंग वॉक में व्यस्त होते हैं। मॉर्निंग वॉक का सदुपयोग वे फोन टॉक के लिए करते हैं।

10 मार्च की सुबह मेरे मोबाइल की कोयल बोली। मैंने उसे अनसुना किया और अपने स्वच्छता अभियान में व्यस्त रहा। इस बीच कोयल दो बार फिर बोली और दोनों बार मैंने अनसुना किया। मन ने कहा कि हो सकता है कोई आवश्यक कॉल हो- शायद कोई सम्मान...पर मैंने मन को मार दिया। मन को मारना ऐसा ही था जैसे आजकल युद्ध की आग में जल रहे हजारों निर्दोषों को मरते देव, शांति प्रेमी मन को मारना पड़ रहा है।

बिना फोटो खिंचवाए अपना स्वच्छता अभियान पूर्ण कर, एक हाथ में चाय का कप और दूसरे में मोबाइल पकड़ा। मोबाइल पकड़ा ही था कि एक अभिन्न मित्र का फोन आ गया। अभिन्न मित्र को लगा था कि आज मेरा जन्मदिन है। उन्होंने बधाई देने के लिए फोन किया था। मैंने जब कहा कि आज तो मेरा जन्मदिन नहीं है तो सफाई में याददाश्त से लेकर, हुआ यूं कि...जैसी सफाई देने लगे। इस बीच फोन ने सूचित किया कि वल्लभ डोभाल का फोन आ रहा है। मैंने अभिन्न मित्र को अनेक बार कहा कि हो गया, पर उनकी सफाई प्रक्रिया पूरी नहीं हो रही थी। वे अपने स्वच्छता अभियान में लगे हुए थे। अंततः उन्होंने फोन बंद किया। मिस्ड कॉल ने बताया कि इस बीच वल्लभ डोभाल जी दो बार फोन कर चुके हैं। मैंने फोन किया। प्रणाम किया तो उनकी शिकायत और जिज्ञासा एक साथ सुनाई दीं, 'कहाँ व्यस्त थे? दो बार फोन किया। 'व्यंग्य यात्रा' का नया अंक कब आ रहा है?'

'आदरणीय, 20 तक आ जाना चाहिए। डाक विभाग की कृपा रही तो आपके जन्मदिन से पहले आपको मिल जाएगा।' वल्लभ डोभाल जी का 97वाँ जन्मदिन 30 मार्च को है। पिछले एक वर्ष से 'व्यंग्य यात्रा' को गर्व है कि उसके हर अंक को लेकर उनकी ऐसी ही उत्सुकता रहती है। मैंने कहा, 'इस उम्र में भी आपकी अध्ययनशीलता न केवल आश्चर्यचकित करती है, प्रेरित भी करती है।'

'काहे की प्रेरणा...पलंग पर पड़े रहते हैं...प्रेम, थक गया हूँ।'

'आपने साहित्य को इतना दिया है कि...'

'क्या दिया है...कौन जानता है वल्लभ डोबाल को...हमसे पहले के बड़े नाम ही दोहराए जाते रहते हैं।'

'आप इतनी उत्सुकता से 'व्यंग्य यात्रा' की प्रतीक्षा करते हैं, मुझे सार्थक काम करने का संतोष मिलता है।'

'तुम अलग तरह की पत्रिका निकाल रहे हो...'

इसके बाद दस मिनट तक उनसे साहित्य और उसकी दुनिया की तोताचश्मी चाल पर बातें हुईं।

सम्मान-जगत का क्रीड़ा व्यापार

21 फरवरी को गुरुग्राम स्थित, अशोक त्यागी के आवास में 'रवींद्रनाथ त्यागी स्मृति, धर्मवीर भारती स्मृति एवं व्यंग्य यात्रा सम्मानों की चयन समिति की बैठक थी। ममता कालिया जी पहली बार उपस्थित हुई थीं। महासचिव रणविजय राव ने चयन प्रक्रिया, सम्मान राशि, सम्मानितों के यात्रा व्यय और आवास प्रबंध आदि की सूचना दी। इस पर ममता कालिया ने कहा, 'प्रेम जी, आज के समय में ऐसी संस्थाएँ बहुत कम हैं जो सम्मान राशि देती हैं, आवास और यात्रा का प्रबंध करती हैं। पिछले दिनों मुझे सम्मानित करने के लिए एक बड़ी संस्था ने बुलाया था। आने-जाने और आवास का प्रबंध तो किया, पर सम्मान के नाम पर कागज का टुकड़ा, शॉल और स्मृति चिह्न थमा दिया।'

इस पर मैंने कहा, 'हम जैसों की उम्र में तो बेचारे स्मृति चिह्न, घर पहुँचकर बिन बुलाए मेहमान जैसे हो जाते हैं। सम्मानों की दुनिया विचित्र है। अनेक मुग्धा नायक-नायिकाएँ आयोजकों को कष्ट नहीं देतीं। अपने खर्चे पर हवाई यात्रा करती हैं। कुछ तो अपनी पसंद का स्मृति चिह्न तक बनवा कर ले जाती हैं। अपनी पसंद के रंग का शॉल।'

एक संयुक्त ठहाका गूँज गया। मैंने आगे कहा, 'ममता जी, एक बात और स्पष्ट कर दूँ। रवींद्रनाथ त्यागी और शारदा त्यागी स्मृति सम्मानों की सम्मान राशि, स्मृति

चिह्न, हॉल व्यवस्था, नाश्ते आदि की व्यवस्था त्यागी जी के पुत्र अशोक जी करते हैं। 'व्यंग्य यात्रा' व्यंग्य चिंतक और धर्मवीर भारती सम्मान की सम्मान राशि आदि की व्यवस्था करती है।'

'बढ़िया है, प्रेम जी! आप भी घर फूंक तमाशा देखते जाएं।'

साहित्य की राजधानी बदल रही है

सन् 1949 में इलाहाबाद में मैं अपने शैशवकाल में घुटनों-घुटनों चलकर बड़ा हो रहा था। उस समय साहित्य की राजधानी इलाहाबाद थी। 1966 में मैंने दक्षिण दिल्ली के साहित्यिक आँगन में घुटनों-घुटनों चलना आरंभ किया। साहित्य की राजधानी दिल्ली थी। धीरे-धीरे विचारधाराएँ नेपथ्य में जाने लगीं और गुटबाजी के कारण खुले मंचों की आवश्यकता महसूस होने लगी। दिल्ली में कुछ खुले मंच उभरे। इन दिनों 'विश्वरंग', 'स्पंदन', 'शिवना' आदि संस्थाओं के खुले मंचों के कारण साहित्य की राजधानी भोपाल का एनसीआर बनने की कगार पर है। अनेक साहित्य उत्सव भी खुले मंच के रूप में साहित्य को लोकतांत्रिक आधार दे रहे हैं।

त्रिकोणीय, द्विकोणीय और जयप्रकाश पांडेय की प्रस्तुति

प्रस्तुत अंक में अपरिहार्य कारणों से 'द्विकोणीय' और 'जयप्रकाश पांडेय की प्रस्तुति' जैसे स्तंभ नहीं आ पा रहे हैं। इस बार त्रिकोणीय के अंतर्गत संतोष वरे और पिलकेंद्र अरोरा के लेखन पर विमर्श है। सामान्यत: 'त्रिकोणीय' एक व्यंग्यधर्मी या चर्चित कृति पर केंद्रित होता रहा है। पिछले दो अंकों से 'त्रिकोणीय' को केवल किसी व्यंग्यकार पर केंद्रित करने का निर्णय लिया गया। पुस्तक पर विमर्श के लिए 'द्विकोणीय' स्तंभ आरंभ किया गया। पिछले दस वर्षों में व्यंग्य साहित्य को समृद्ध करने वालों की, दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि हुई है। मनोहर श्याम जोशी, शंकर पुनतांबेकर, लतीफ घोंघी आदि पर कब से विशेषांक निकालने का मन बना रखा है। सूर्यबाला, विष्णु नागर, ज्ञान चतुर्वेदी और यशवंत व्यास, सुभाष चंदर आदि पर विशेषांक निकालने को संपादकीय मन तरस रहा है। 'त्रिकोणीय' की सूची बहुत लंबी है। अनेक व्यंग्यधर्मी ऐसे हैं जो साठ ही नहीं, सत्तर पार कर चुके हैं। पचपन बरस के अनेक व्यंग्यधर्मी रचनाकार अपनी गुणवत्तापूर्ण रचनाशीलता के कारण संपादक के लिए चुनौती बने हुए हैं। अनेक बार मन हुआ कि त्रिकोणीय पर एक विशेषांक निकाल दूँ जिसमें कम से कम दस व्यंग्यकारों के लेखन पर विचार-विमर्श हो।

रवींद्रनाथ त्यागी, धर्मवीर भारती, शारदा त्यागी स्मृति एवं व्यंग्य यात्रा व्यंग्य चिंतक एवं शब्दान्वेषी कला भूषण सम्मान

रवींद्रनाथ त्यागी स्मृति एवं व्यंग्य यात्रा प्रबंध समिति की बैठक में बड़ी संख्या में प्राप्त संस्तुतियों/प्रविष्टियों पर गहन चर्चा हुई। 'रवींद्रनाथ त्यागी स्मृति व्यंग्य यात्रा शीर्ष सम्मान-2026' विष्णु नागर को, सोपान सम्मान विनोद कुमार विक्की को और 'शारदा त्यागी स्मृति व्यंग्य यात्रा सम्मान-2026' स्नेहलता पाठक को दिया जाएगा। 'धर्मवीर भारती स्मृति व्यंग्य यात्रा सम्मान-2026' हरीश पाठक को, 'व्यंग्य यात्रा व्यंग्य चिंतक सम्मान-2026' संयुक्त रूप से बी.एल. आच्छा तथा संजीव कुमार को दिया जाएगा। प्रत्येक पत्रिका को कलात्मक सौंदर्य प्रदान करने वाले शब्दान्वेषी कलाधर्मियों के योगदान को साहित्यिक सम्मानों की सूची से बाहर रखा जाता है। श्री संदीप राशिनकर अनेक वर्षों से 'व्यंग्य यात्रा' को बिना किसी पारिश्रमिक के कलात्मक सहयोग दे रहे हैं। उनका यह सहयोग अप्रतिम है। इस क्षेत्र में उनके कलात्मक योगदान एवं व्यंग्य यात्रा को सहयोग को रेखांकित करने के लिए 21 मार्च को सम्मान समारोह में उन्हें 'शब्दान्वेषी कला भूषण व्यंग्य यात्रा सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। सम्मान समारोह 21 मार्च 2026 को दिल्ली स्थित हिंदी भवन में शाम 5 बजे आयोजित होगा।

भिक्षाम् देहि...

शुभचिंतकों!

'व्यंग्य यात्रा' को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करने के लिए अद्विक प्रकाशन, बलजीत सिंह, गोपीकृष्ण बूबना, राजेश्वर वशिष्ठ, मधुर कुलश्रेष्ठ, गोपेश कुमार शाह, अशोक भाटिया, श्रद्धा घाटे, और श्रीकांत चौधरी का आभार।

'व्यंग्य यात्रा' की विनम्र श्रद्धांजलि

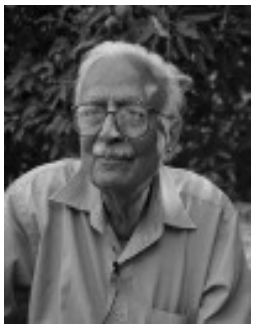

विनोद कुमार शुक्ल
(1 जनवरी 1937 - 23 दिसंबर 2025)

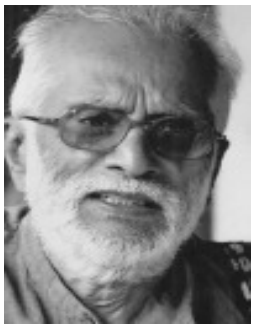

ज्ञानरंजन
(21 नवंबर 1936 - 10 जनवरी 2026)

दया प्रकाश सिन्हा
(2 मई 1935 - 7 नवम्बर 2025)

मधुसूदन आनंद
(20 दिसंबर 1952 - 18 फरवरी 2026)

अरविंद तिवारी, शिकोहाबाद

अक्टूबर दिसंबर 2025 में प्रकाशित हरिशंकर राढ़ी का लेख "नाम बड़े पर...." एक ऐसा लेख है जो हिंदी साहित्य में फिर से उस बहस को जीवित कर सकता है, जिसमें पठनीयता को सर्वोपरि माना जाता है। राढ़ी जी अपनी बात महुआ माजी के उपन्यास "मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ" से शुरू करते हैं।इस उपन्यास को इन पंक्तियों के लेखक ने भी पढ़ने की कोशिश की, पर सफल नहीं हो सका। इससे पहले महुआ माजी के उपन्यास "मैं बोरिशाइल्ला" को मैंने किसी तरह पढ़ लिया था। "मैं बोरिशाइल्ला" से ही महुआ माजी प्रसिद्ध हुई थीं। बंगला देश की पृष्ठभूमि पर आधारित इस उपन्यास को यू के कथा सम्मान के अलावा राजकमल प्रकाशन ने बड़ी धनराशि वाला सम्मान दिया था। तब इस घटना के खिलाफ कई लेखकों ने लिखा भी था और राजकमल पर आरोप भी लगे थे। महुआ माजी के चरित्र को लेकर भी कीचड़ उछाला गया। कहानी की नामी पत्रिकाओं में लगातार इस पर बहस हुई थी। पर "मैं बोरिशाइल्ला" के महत्वपूर्ण कंटेंट को आप खारिज नहीं कर सकते। इसकी मौलिकता और कॉपी पेस्ट वाले प्रश्न उठे हों, पर महुआ माजी का यह उपन्यास खारिज नहीं किया जा सकता। इतना जरूर है कि उनका दूसरा उपन्यास जिसका जिक्र हरिशंकर राढ़ी ने किया है वह पहले के मुकाबले पठनीय नहीं है। मैं राढ़ी जी के इस मत से शत प्रतिशत सहमत हूं। अब तो खैर महुआजी सियासी हस्ती हैं इसलिए उनसे बहुत उम्मीदें नहीं हैं।

कृष्णा सोबती ने महुआ माजी के उपन्यास के बारे में कोई टिप्पणी की है राढ़ी जी का उससे असहमत होना स्वाभाविक ही है।मैं भी "मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ" के बारे में सोबती जी से सहमत नहीं हूं। पर किसी भी आधार पर आप कृष्णा सोबती जी के "जिंदगीनामा" को अपठनीय नहीं बता सकते। मेरा अपना मानना है कृष्णा सोबती की भाषा अनूठी है जो उनके लिखे को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। हरिशंकर राढ़ी जी के इस कथन से सहमत हूं कोई सम्मान मिलने से कोई कृति पठनीय नहीं हो जाती। कृष्णा सोबती जितनी अपने बेबाक लेखन के लिए जानी जाती हैं उतनी ही, अपनी परिष्कृत भाषा के लिए।नए लेखक उन्हें पढ़कर भाषा का संस्कार प्राप्त करते हैं। जिंदगीनामा सहित उनकी सभी कृतियां बेहद पठनीय हैं। इसलिए जिंदगीनामा को लेकर राढ़ी जी के विचार से मैं सहमत नहीं हूं।

इस बात से भी सहमत नहीं हूं कि गीतांजलिश्री का नाम बुकर मिलने से पहले चर्चित नहीं था। मैंने उनके उपन्यासों "माई" और "हमारा शहर उस बरस" को बुकर मिलने से पहले ही पढ़ा था। दरअसल गीतांजलिश्री का जन्म हमारे मैनपुरी जिले में हुआ था क्योंकि उनके पिताजी उन दिनों मैनपुरी के जिलाधिकारी थे। मैंने कथाकार पुन्नीसिंह पर लिखे अपने एक लेख में मैनपुरी जिले में जन्में तीन कथाकारों का जिक्र किया है। कमलेश्वर, पुन्नीसिंह और गीतांजलिश्री। तीनों का हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। यह अवश्य है कि गीतांजलिश्री की भाषा शैली लीक से हटकर है। उनके उपन्यास सामान्य उपन्यासों की तरह बेहद पठनीय नहीं हैं। शुरू में सामान्य कथा की तरह लगता है उनका लेखन, लेकिन जैसे जैसे आप आगे बढ़ते जाएंगे आपको विशिष्टता की अनुभूति होने लगेगी। "माई" और "हमारा शहर उस बरस" से अलग नहीं है "रेत समाधि", पर जो किताब सम्मानित हो जाती है वह बेस्ट सैलर हो जाती है।

विनोद कुमार शुक्ल को अभी अभी बड़ी रॉयल्टी मिली थी। जश्न का रंग फीका भी नहीं पड़ा था कि वह दुनिया छोड़ गए। जब बड़ी रॉयल्टी मिली तो उनके उपन्यासों को लेकर भी बहस हुई कि वे बेहद पठनीय नहीं हैं। पर जिन लोगों ने "नौकर की कमीज" और "दीवार में एक खिड़की रहती थी" को पढ़ा है वे जानते हैं सामान्य लोगों को लेकर असाधारण लेखन क्या होता है।मैं समझता हूं जैसी सरल भाषा उनकी कविताओं में है वैसी ही उपन्यासों में। उनके उपन्यास के वाक्यों को लोग कविता भी बताते हैं। प्रश्न इस असाधारण शैली को लेकर है। क्या यह जादुई यथार्थवाद टाइप का कुछ है। इस परंपरा की झलक हमें निर्मल वर्मा के उपन्यासों में मिलती है। पठनीय हुए बिना कोई उपन्यास बड़ी रॉयल्टी नहीं दे सकता, इसलिए विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास अपठनीय नहीं हैं।

यह भी सही है कि हर पाठक के लिए पठनीयता का पैमाना अलग अलग होता है। जो पुस्तक राढ़ी जी को अपठनीय लगती है किसी दूसरे को पठनीय लग सकती है।

मुकेश असीमित, गंगापुर सिटी

'व्यंग्य यात्रा' का यह त्रैमासिक अंक हाथ में आते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि यह पत्रिका व्यंग्य को मनोरंजन की सुविधा नहीं, बल्कि बौद्धिक असुविधा के रूप में प्रस्तुत करती है। यह अंक पढ़ते हुए कई जगह मैं एक पाठक की जगह अपने को रखता हूँ तो मैंने पाया की मैं मुस्कुराता है, कई जगह असहज होता हूँ, और कई जगह ठहरकर सोचने को मजबूर होता हूँ- और यही किसी सार्थक व्यंग्य की असली पहचान है।

अंक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें रचना और विमर्श समान स्तर पर चलते हैं। रचनाएँ केवल व्यंग्य नहीं रचतीं, बल्कि व्यंग्य की जमीन को भी जाँचती-परखती हैं।

विश्वेंद्र ठाकुर के व्यंग्य उपन्यास से प्रस्तुत अंश "किस्सा बहराम चोट्टे का" पढ़ा। बह्म चोट्टे जैसा पात्र व्यवस्था और समाज- दोनों का साझा उत्पाद है। इस अंश को पढ़कर उपन्यास को पूरा मँगवाने की तीव्र इच्छा जागती है, जो किसी भी अंश